भाग्यवाद हमें नपुंसक और निर्जीव बनाता है

युग निर्माण योजना, मथुरा

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

भाग्यवाद हमें नपुंसक और निर्जीव बनाता है

"जो भाग्य में लिखा है, सो होगा--होतव्यता टलेगी नहीं--जितना मिलना है, उतना ही मिलेगा—कर्म-रेख मिटती थोड़े ही है--जब अच्छे दिन आयेंगे, तभी सफलता मिलेगी—जैसी मान्यतायें यदि मजबूती से मन में जड़ जमा लें तो किसी भी मनुष्य को अकर्मण्य और निराशा-वादी बना देंगी। वह यही सोचता रहेगा कि जब अच्छा समय आयेगा तब सब कुछ अपने आप ठीक हो जायगा, यदि अपने भाग्य में नहीं है तो मेहनत करने पर भी क्यों मिलेगा ऐसे भाग्यवादी व्यक्ति न अपने पुरुषार्थ पर विश्वास करते हैं और न पूरे उत्साह से किसी काम में लगते हैं, फलस्वरूप उन्हें कोई महत्वपूर्ण सफलता भी नहीं मिलती। आशा की ज्योति जलती ही न हो तो प्रगति पथ पर प्रकाश कैसे उत्पन्न होगा!

यह विचारधारा भारतीय दर्शन के सर्वथा विपरीत है। अपने यहाँ सदा पुरुषार्थ, कर्म, प्रयत्न और संघर्ष को मानव-जीवन की अनिवार्य आवश्यकता के रूप में प्रति-पादित किया जाता है। अपना सारा अध्यात्म इतिहास और दर्शन इसी प्रतिपादन से भरा पड़ा है। फिर यह भाग्यवादी विकृत विचारधारा कहाँ से चल पड़ी? इसकी खोज करने पर स्पष्ट हो जाता है कि सामन्तवादी शोषकों ने अपनी अत्याचारों से पीड़ित जनता को किसी प्रकार शान्त सन्तुष्ट करने के लिये यह मनोवैज्ञानिक नशे की गोली विनिर्मित की। उनके इशारें पर साधु, पण्डित भी

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities&Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

इसी तरह के किस्से कहानी गढ़कर पीड़ितों के रोष-प्रति-रोष को शान्त शमन करने में लगे रहे।

नृशंस विदेशी शासन के द्वारा उत्पीड़ित जनता बहुत क्षुब्ध और आवेश ग्रस्त थी। आये दिन कत्लेआम, मन्दिरों का गिराया जाना, सयानी लड़कियों को जबर-दस्ती ले जाना, बलात् धर्म-परिवर्तन करना जैसी घट-नायें किस का खून न खौला देंगी ? कौन प्रतिरोध के लिये तैयार न होता ? पर आश्चर्य इस बात का है कि मुट्ठी भर अत्याचारियों के विरुद्ध समुद्र जितनी विस्तृत और परम तेजस्वी भारतीय जनता प्रतिरोध की दृष्टि से कुछ भी न कर सकी और वे दुष्ट उत्पीड़न लम्बी अवधि तक यथावत् चलते रहे। इस नपुंसकता के पीछे हमारी भाग्यवादी दार्शनिक भ्रष्टता का ही प्रमुख हाथ रहा, जिसने क्षोभ, रोष प्रतिरोध एवं संघर्ष की शौर्य प्रकृति को चकनाचूर करके फेंक दिया।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कत्लेआम हुए और हमें कहा गया—जिनको जिस प्रकार, जिस दिन जिसके हाथों मरना है, वह उसी तरह मरेंगे। उस विधान को कोई मेट नहीं सकता। उनका प्रारब्ध ऐसा ही था, जिसके कारण उन्हें मरना पड़ा। मारने वाले तो निमित्त मात्र थे उन पर रोष करने से क्या लाभ ? लड़कियों को घरों से उठाकर ले गये तो कहा गया, जिस लड़की का अन्न जहाँ बदा है, जिसके साथ इसका जूरी-संयोग लिखा बदा है, जहाँ दुःख-सुख इसे भोगना है वहीं तो यह रहेगी। इस विधि-विधान के प्रति-कूल रोष करने से क्या बनेगा। मुट्ठी भर विदेशी, रोमांचक, लूट-खसोट और नृशंस उत्पीड़न करते रहे और हमें कहा गया भगवान् की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता, फिर यह अप्रिय लगने वाली घटनायें भी उन्हीं की इच्छा

से हो रही हैं।

शोषक और दुष्ट, दुराचारी अपने द्वारा उत्पीड़ित शोषित लोगों को इसी आधार पर ठण्डा करते रहे कि तुम्हारे भाग्य में कुछ ऐसा ही लिखा था जिसके कारण दुःख दरिद्र सहन करने पड़ रहे हैं। हम तो निमित्त मात्र हैं। असली कारण तो तुम्हारा भाग्य है। गायें कटती रहें तो हम बधिकों को किस मुख से कह सकते हैं कि तुम्हारा कृत्य अनुचित है ? भाग्य और भगवान् की इच्छा ही जब एक मात्र कारण है, तब उस कुकृत्य को रोकने की, विरोध करने की बात सोचना ही बेकार है। हर पाप और अपराध का करने वाला अपने पक्ष में सही दलील देकर अपने को निर्दोष सिद्ध कर सकता है, फिर उस बेचारे को क्यों कोई रोके ? संसार के दीन-दुःखी, पीड़ित, अपङ्ग जब भगवान की इच्छा से ही इस स्थिति में पड़े हैं, विधि का विधान भोग रहे हैं तो उनकी सेवा, सहायता करना व्यर्थ है। इससे तो भगवान् और विधाता दोनों ही नाराज होंगे कि हमारे विधान में क्यों हस्तक्षेप किया ? ऐसी दशा में दीन दुखियों की सेवा, सहायता करना भी एक अपराध बन जाता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

किसी समाज का दर्शन-दृष्टिकोण भ्रष्ट हो जाय तो उसमें सर्वांगीण भ्रष्टता आती है। भाग्यवाद हमारी दार्शनिक भ्रष्टता है। जिसने हमारी कर्तव्य निष्ठा को बुरी तरह कुचल मसल कर फेंक दिया और हम किसी समय के विश्व मूर्धन्य आज दुःख दारिद्र की हीन परिस्थितियों में पड़े बिलख रहे हैं। बड़े से बड़े झटके खाकर भी जर्मनी और जापान पुनः अपनी पूर्व स्थिति पर पहुँच गये, पर पच्चीस वर्ष बीत जाने पर भी हमारी राजनैतिक स्वाधीनता हमें प्रगति पथ पर अग्रसर न कर सकी। इसका एक

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities&Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

बहुत बड़ा कारण हमारी दार्शनिक पराधीनता है। बौद्धिक दृष्टि से हम अभी भी गुलाम हैं।

ग्रह नक्षत्र आसमान में रहते हैं। वे पाञ्चभौतिक अणु-परमाणुओं से बने पिण्ड मात्र हैं। जैसा कि चन्द्रमा पर पदार्पण करके तथा मङ्गल, शुक्र आदि की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करके पता लगा लिया गया है उसमें न देवता रहते हैं न प्राणी यदि रहते भी हों और कुछ प्रभाव भी डालते हों तो वह समस्त पृथ्वी या उसके किसी भाग पर ही हो सकता है। यह किसी प्रकार सम्भव नहीं कि ये निर्जीव पिण्ड अलग-अलग प्रकार के प्रभाव डालें।

विवाह-शादियों में जन्म-पत्र मिलाने की प्रथा से असंख्य सुयोग्य जोड़े मिलने से वंचित रह जाते हैं। लड़की लड़के सुयोग्य हैं, सम्बन्धी भी रजामन्द हैं पर पण्डित जी ने पत्रा देखकर बता दिया कि विधि वर्ग नहीं मिलता। बस सारा आधार नष्ट हो गया।

लड़की मङ्गली है। लड़का मङ्गली है। बस इतने भर से उनके विवाह-शादी असम्भव नहीं, तो कठिन अवश्य हो जाते हैं। सुयोग्य बच्चे जो सुयोग्य साथी पाने के अधिकारी थे, इस मूढ़ मान्यता के शिकार हो गये कि उनकी कुण्डली में मङ्गल बैठा है उन्हें सुयोग्य साथी के चुनाव से वंचित रहना पड़ा। कोई मङ्गली जोड़ा बैठे तब काम चले। ढूँढ़—खोज में निराश अभिभावक जहाँ भी मंगली की तुक बैठती है, वहीं विवाह की बला काट देते हैं, ये बच्चे आजन्म रोते-बिलखते रहते हैं।

जन्म-पत्र बनवाने और किसी को दिखाने का अर्थ है अपने ऊपर बैठे-ठाले एक चिन्ता, भय एवं अशान्ति का आवरण तान लेना। नौ ग्रहों में से कभी कोई प्रतिकूल न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। ज्योतिषी इसी बात को

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories Poems,Great Personalities&Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बताकर डरा देगा और प्रयत्न करेगा कि उसे पूजा-पाठ के—ग्रह-शांत के नाम पर कुछ ऐंठने को मिले। डरा हुआ व्यक्ति देता भी है और ज्योतिषी की गहरी छनती रहती है। पर अपने ऊपर जो आशङ्का और भीति सवार हो गई यह हर घड़ी खून सुखाती रहेगी और मानसिक शान्ति को नष्ट करती रहेगी। ग्रहों को शान्त या अशान्त कर सकना ज्योतिषी के हाथ में होता तो वह गर्मी के दिनों में सूर्य को जरूर शान्त कर देता ताकि पृथ्वी पर सुहावना मौसम बना रहे। चन्द्र-आकर्षण को जरूर शान्त कर देता ताकि समुद्र में ज्वार-भाटे न उठते।

शकुन, मुहूर्त हमारी गतिविधियों को पग-पग पर रोकते हैं। अभी कोई आवश्यक काम करना है, मुहूर्त नहीं निकला तो उसे रोकना ही पड़ेगा। सोमनाथ मन्दिर पर मुहम्मद गजनवी ने आक्रमण किया तो उसका प्रतिकार करने का मुहूर्त ही नहीं निकला फलस्वरूप बिना लड़े ही उस विशाल सम्पत्ति पर आक्रमणकारियों का अधिकार हो गया। ऐसी दुर्भाग्य पूर्ण दुर्घटनायें आये दिन घटित होती रहती हैं और हर क्षण मूल्यवान् है इस तथ्य को भूलकर हम किसी अच्छे मुहूर्त की राह जोहते हैं।

हाथ की रेखाओं को—चेहरे पर किसी अङ्ग की—बनावट देखकर जिन्हें भाग्यहीन घोषित कर दिया है, उन बेचारों की मनोभूमि एक प्रकार से कुचल दी गई। उन्हें प्रगति पथ अग्रसर होने का उत्साह अब कहाँ से मिल सकेगा? भ्रान्तियों के जंजाल से हम निकलें और इस बौद्धिक परावलम्बन की बेड़ियाँ तोड़ फेकें यह हमारे लिए उचित एवम् उपयुक्त है।

—'बौद्धिक परावलम्बन का जुआ उतार फेकें' पुस्तिका से

युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा। फ्रो० २३

Free Download Life Chaning Books,Articles,Stories,Poems,Great Personalities&Many More
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org